B.A. History Hon's, Part-I
Paper: II, Unit-I, Date: 24.11.2020
Lecture N.-22
Lession: गौरवपूर्ण क्रांति

गौरवपूर्ण क्रांति या सन् 1688 की क्रांति के द्वारा इंग्लैण्ड का राजा जेम्स द्वि
को राजसिंहासन गवांना पड़ा। 18वीं सदी में विश्व में तीन प्रमुख क्रांतियाँ
मे भिन्न-भिन्न देशों में अवश्य हुई किन्तु इनके परिणाम एवं प्रभाव वि
पर दूरगामी हुए। इन क्रांतियों में सर्वप्रथम इंग्लैंड में घटित वैभवपूर्ण क्रांति
(1688 ई.) है। इसे 'गौरवपूर्ण क्रांति' अथवा 'रक्तहीन क्रांति' कहा जाता है क्यों
इस क्रांति में किसी भी पक्ष के व्यक्ति के रक्त की एक बूंद भी नहीं गि
और केवल प्रदर्शन एवं वार्तालाप से ही क्रांति सफल हो गई।

1688 ई. में इंग्लैंड में हुई इस रक्तहीन क्रांति ने अमेरिका मे
भी स्वतंत्रता की मांग बुलंद की। अमेरिका में शासन ब्रिटिश संसद द्वारा
चलाया जाता था जो अमेरिकावासियों को सहन न था। अतः अमेरिकी उपनि
ने अपनी स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष किया वही अमेरिकी क्रांति कहलाता है
ये क्रांति 1776 ई. में हुई। उपरोक्त दो क्रांतियों के परिणाम एवं प्रभाव स्वरूप
यूरोप में भी क्रांति का दौर प्रारंभ हुआ। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस मे
बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ। इस प्रकार शासक, कुलीन तथा चर्च के
विरुद्ध कृषकों, श्रमिकों तथा बुद्धिजीवियों के द्वारा फ्रांस में जो क्रांति हुई
वही 1789 की फ्रांसीसी क्रांति कहलाती है। भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भी
इस क्रांति का महत्व है।

परिचय: 1685 ई. में चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के बाद उसका लघुभ्राता इंग्
के राजसिंहासन पर जेम्स द्वितीय के नाम से आसीन हुआ। जेम्स द्वितीय
राजा बनने के बाद कैथोलिक धर्म का प्रचार व प्रसार किया। अन्त में जे
द्वितीय को इंग्लैंड छोड़ना पड़ा और संसद उसकी पुत्री मेरी और उसके पति
विलियम को इंग्लैण्ड की शासिका बनाया। इस घटना को गौरवपूर्ण एवं वैभवपूर्ण
क्रांति कहते हैं। इंग्लैण्ड की गौरवपूर्ण क्रांति को रक्तहीन क्रांति
वैभवपूर्ण क्रांति के कारण: इंग्लैण्ड की महान अंग्रेजी क्रांति शांतिपूर्वक सम्पन्
नाम से जाना जाता है। 1688 ई. की महान अंग्रेजी क्रांति शांतिपूर्वक बदल
हो गयी थी। इंग्लैण्ड का राजा बदला, इंग्लैण्ड की शासन व्यवस्था बदल
पर कहीं खून का एक कतरा भी न गिरा। सम्राट जेम्स द्वितीय को अपने
निरंकुश शासन संसद की अवहेलना करने तथा प्रोटेस्टेंट धर्म विरोधी नीति
कारण गद्दी छोड़नी पड़ी थी। 1688 ई. क्रांति के बाद इंग्लैंड का सम्राट बना
विलियम तृतीय। महारानी एलिजाबेथ प्रथम का संबंध ट्यूडर वंश से था।
इंग्लैण्ड एवं फ्रांस के बीच सपंवर्षीय युद्ध हुआ था। गुलाबों का युद्ध इंग्लै
में हुआ था। 1669 में इंग्लैण्ड की संसद ने "अधिकार का अधिनियम" को पारित किया

राजनीतिक कारण: जेम्स द्वितीय की निरंकुशता: एवं स्वेच्छाचारी शासक था।
फलतः जनता द्वारा जेम्स का विरोध होना स्वभाविक था।
संसद द्वारा अधिकारों के लिए संघर्ष: संसद अपने विशिष्ट अधिकारों का उपयो
चाहती थी। अंत में संसद ने राजा पर विजय प्राप्त की।
स्वतंत्र न्यायालय: चार्ल्स द्वितीय के अवैध पुत्र मनमथ ने सिंहासन प्राप्ति के लिए
जेम्स के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और चार्ल्स द्वितीय को उत्तराधिकारी घोषित कर दिया

जेम्स द्वितीय की निष्फल विदेश-नीति : जेम्स द्वितीय फ्रांस के कैथोलिक राजा लुई चतुर्दश से आर्थिक और सैनिक सहायता प्राप्त कर इंग्लैण्ड में अपना निरंकुश स्वेच्छाचारी शासन स्थापित करना चाहता था। वह लुई चौदहवें के धन और सैनिक सहायता के आधार पर राज करना चाहता था।

धार्मिक कारण : कैथोलिक धर्म के लिए प्रयास : जेम्स कैथोलिक मत का अनुयायी था, जबकि इंग्लैण्ड की अधिकांश जनता एंग्लिकन मत की अनुयायी थी। उसने लंदन में कैथोलिक गिरजाघर भी स्थापित किया। इससे इंग्लैण्ड के प्युरिटन और प्रोटेस्टेंट उसके विरोधी हो गये।

टेस्ट अधिनियम के स्थगित करना : टेस्ट अधिनियम के अन्तर्गत केवल एंग्लिकन चर्च के अनुयायी ही सरकारी पद पर रह सकते थे। मंत्री, न्यायधीश, नगर-निगम के सदस्य तथा सेना में ऊँचे पदों पर कैथोलिक नियुक्त किए गए।

विश्वविद्यालयों में हस्तक्षेप : जेम्स ने विश्वविद्यालयों में भी ऊँचे पदों पर कैथोलिक नियुक्त कर दिये। इससे प्रोटेस्टेंट सम्प्रदाय के लोग जेम्स विरोधी हो गये।

धार्मिक अनुग्रहों की घोषणाएँ : जेम्स द्वितीय ने इंग्लैंड को कैथोलिक देश बनाने के लिए 1687 ई० और 1688 ई० में दो बार धार्मिक अनुग्रह की घोषणा की।

सात पादरियों पर अभियोग और उनका बंदी बनना : जेम्स ने प्रत्येक रविवार को उसकी द्वितीय धार्मिक घोषणा पादरियों द्वारा चर्च में प्रार्थना के अवसर पर पढ़े जाए

वैभवपूर्ण क्रांति की घटनाएँ : जेम्स द्वितीय के पुत्र का जन्म : जेम्स द्वितीय की पहली पत्नी की मेरी नामक पुत्री हुई थी। वह प्रोटेस्टेंट मतावलंबी थी और हालैण्ड में ऑरेंज के राजकुमार विलियम को ब्याही गयी थी। वह भी प्रोटेस्टेंट था।

हालैण्ड के विलियम और मेरी का निमंत्रण : टोरी और व्हिग दल के सदस्यों और पादरियों ने एक जनसभा आयोजित कर निर्णय लिया कि जेम्स द्वितीय के दामाद विलियम और पुत्री मेरी को इंग्लैण्ड के राजसिंहासन पर आसीन कर दिया।

महत्व और परिणाम

1688 ई० में इंग्लैण्ड में शासकों का परिवर्तन बिना रक्त की बूँद बहाए सम्पन्न हो गया। इसलिए इस घटना को वैभवपूर्ण महान शानदार क्रांति कहते हैं। राज्यक्रांति का महत्व उसके गर्जन-तर्जन में नहीं, अपितु उसके उद्देश्यों की विवेकशीलता और उपलब्धियों की दूरगामिता में है। यह एक युग निर्णायकारी घटना है। इससे इंग्लैण्ड में लोकप्रिय सरकार का युग प्रारंभ हुआ और सत्ता निरंकुश स्वेच्छाचारी राजाओं के हाथ से निकलकर संसद के हाथों में आ गयी। इसके परिणाम निम्नलिखित हुए -

इस क्रांति से स्टुअर्ट राजाओं और संसद के बीच दीर्घकाल से चले आ रहे संघर्ष का अन्त हो गया। इस संघर्ष में संसद की विजय हुई।

सम्प्रभुता संसद में निहित : क्रांति से संसद ने 'बिल ऑफ राइट्स' पारित कर उसपर विलियम और मेरी की स्वीकृति ले ली।

संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना : क्रांति के पूर्व राजा सर्वोपरि था पर इसके बाद राजा संसद के अधिनियम के अन्तर्गत एक सामान्य व्यक्ति रह गया।

□ डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर